

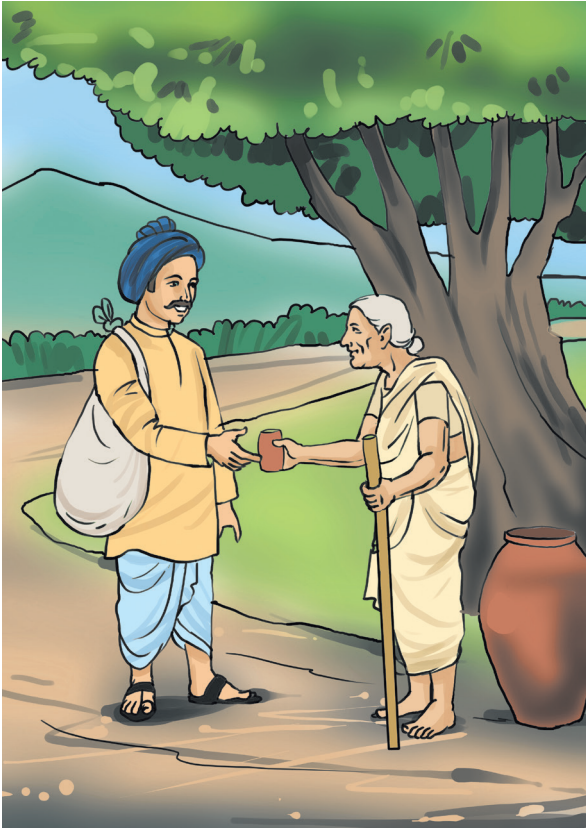
## २. भाणुदासस्स गव्वहरणं

अहंकार हा व्यक्तीच्या सर्वांगीण विकासाच्या नाशास कारणीभूत होतो. अहंकारी व्यक्तीचे आचरण अविनयी असते. त्यामुळे ती व्यक्ती कितीही विद्वान असली, तरी त्याच्या विद्वत्तेचा उपयोग कोणालाही होत नाही.

भानुदास नावाचा एक अत्यंत विद्वान पंडित होता. त्याला त्याच्या विद्वत्तेचा खूप गर्व झाला होता. तेव्हा त्याच्या विद्वत्तेचा गर्व नष्ट करण्याचे सरस्वती देवीने ठरविले. वृद्ध स्त्रीचे रूप घेऊन सरस्वती देवीने भानुदासाचे गर्वहरण कसे केले, याचे अत्यंत सुंदर चित्रण प्रस्तुत पाठात केले आहे.

तेव्हा विद्यार्थ्यांनीही प्राप्त केलेल्या ज्ञानाचा अहंकार न धरता ते ज्ञान स्वतःच्या व इतरांच्या विकासासाठी कसे उपयुक्त होईल यासाठी प्रयत्नशील राहावे, हे प्रस्तुत पाठातून स्पष्ट केले आहे.

भाणुदासो नामस्स एगो पंडिओ अत्थि। सो विविह कला-विज्जा संपण्णो अत्थि। तेण सो अच्चंतं गव्विओ होइ। अन्नया सो अण्णं गामं गच्छंतो पवासम्मि तण्हाए तसं होइ। तम्मि वेलाए कर्हि अंतराए एगा वुड्ढ-इत्थि कूवाए जलं भरइ। तीए समीवं गच्छिऊण सो भणइ, ‘भो माया! अहं तण्हाए बहुलं वाउलं होमि। ता ममं थोवं जलं देहि। तेण तुमं पुण्णं लब्भइ।’



**वुड्ढइत्थी** - ‘बालय! अहं तुमं ण जाणामि। किवाए पढमं तुमं परिचयं देसु।’

**भाणुदासो** - अहं एगो पवासी अत्थि।

**वुड्ढइत्थी** - ‘वच्छ! केवलं दुवे च्चिय पवासी सन्ति। एगो चंदो, बीओ य सूरिओ। एए दुवे वि रत्तिए दिणे पवासं करेन्ति।

**भाणुदासो** - अम्मो! अहं अतिथी। सव्वठाणे लोगा अतिथीं जलं देन्ति। तओ ममं जलं देसु।

**वुड्ढइत्थी** - ‘रे वच्छ! इमे लोए दुवे च्चिय अतिथी आसि। एगं धणं, बीओ य तारुण्णं। एए दुवे वि दीह-कालं ण वसन्ति। तओ सच्चं कहेसु तुमं को अत्थि?’

**भाणुदासो** - ‘अम्मा! अहं सहणसीलो। एण्हिं ता ममं जलं देसु।’

**वुड्ढइत्थी** - ‘अरे, पुत्त! दुवे चिय सहणसीला सन्ति। एगा धरणीमाया, बीओ य रूक्खो। धरणीमाया पुण्णवंत-अपुण्णवंत य लोगाणं वि भारं सहेइ। जे लोग रूक्खोवरि पहरन्ति ताणं वि सो महरं महरं फलं पुप्फं च देइ।

**भाणुदासो** - (वुड्ढ-महिलाए तं वयणं सुणिऊण भणइ) ‘अंबा! अहं निब्बंधं जाणिऊण देसु ममं उदगं।’

**वुड्ढइत्थी** - ‘रे पुत्त! णहिं, णहिं तुमं निब्बंधं वि न

होसि। इह लोए दुवे चिय निब्बंथं। एगो नहं, बीओ केसं।’ ताणं सययं खुड्डइ तओ वि ते णिच्चं वड्ढन्ति। (एवं पयारे सा वुड्ढइत्थीए चउरजुत्तं वयणं सुणिऊण भाणुदासो ससंभमं पडइ। अईव वाउलं होऊण भणइ)

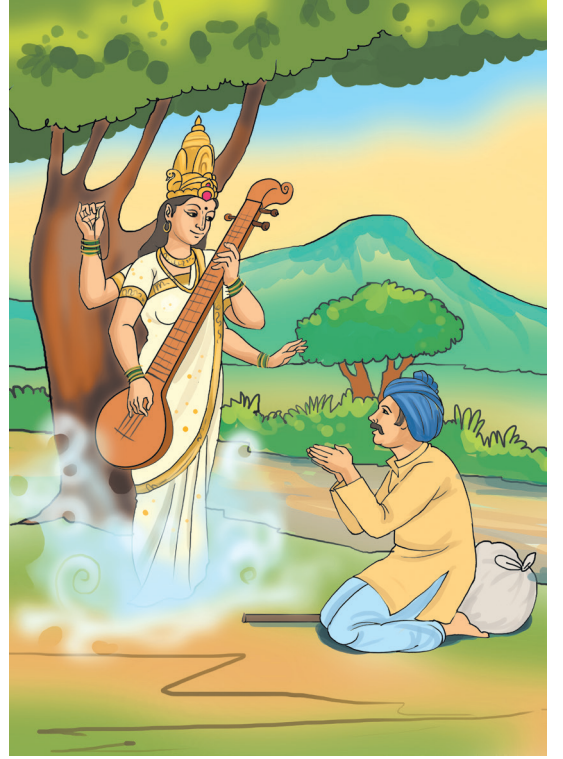
**भाणुदासो** – ‘भो माया! अहं मुखो अत्थि। एण्हं ता मम उदगं देहि।’

**वुड्ढइत्थी** – ‘रे बालय! एए पुहवीए दुवे चिय मूढा अत्थि। एगो राया, सो निबुद्धो होऊण वि सव्वोवरिं रज्जं करेइ। बीओ पंडिअ-जणा, जे रन्नाए रंजणत्थं असच्च-घडणा वि सच्चं ति सिद्धं करणत्थं पयत्तं करेन्ति।

**भाणुदासो** – तं वुड्ढाए वयणं सुणिऊण भाणुदासो मोणं धारणं करेइ। तीए वुड्ढाए चरणं निय मत्थयं ठविऊण अईव वाउलं होऊण विण्णवइ, ‘अम्मो, ममं णिरं देसु।’

**वुड्ढइत्थी** – ‘उट्ठसु वच्छ! उट्ठसु।’  
(एवं भिण्णं रवं सुणिऊण विम्हिय-मणेण भाणुदासो उवरिं पासइ ताव तस्स वुड्ढइत्थीए ठाणे पच्चक्खं सरस्सइदेवी दिट्ठइ। विलक्खिओ सो अईव विण्णएण तं सरस्सइदेवीं वंदणं करेइ।)

**वुड्ढइत्थी** – ‘भो भाणुदास-वच्छे! विज्जाए णाणस्स वुड्ढीं होइ। अहंकारेण सव्वणासं चिय होइ। तुमं तुज्झ णाणस्स गव्वं होइ। अहंकारेण मणुस्सं जसं, सम्माणं, कित्ती ण लब्भइ।’ ‘विज्जा विण्णएण सोहइ’ तओ जइ तुमं जसं-कित्ति-सम्माणं इच्छसि ता तुज्झ हियए गव्वं मुंचसु। एयं पडिबोहणत्थं मए वुड्ढइत्थीए रूवं घेइ।’



## शब्दार्थ

**अन्नया** – एकदा

**पवास** – प्रवास

**वुड्ढ-इत्थी** – वृद्ध स्त्री

**वाउलं** – व्याकूल

**रूक्ख** – वृक्ष

**मुख** – मूर्ख

**वयणं** – बोलणे

**विम्हिय** – विस्मय, आश्चर्य

**विलक्खिओ** – आश्चर्यचकित झालेला

**मुंच** – सोडणे, त्यागणे

**महुर** – गोड

**पुप्फ** – फुले

**खुड्ड** – तोडणे

**वि** – सुद्धा

**ससंभमं** – संभ्रमित होणे

**उयय** – पाणी

**निब्बधं** – निर्बुद्ध, हट्टी

**रन्ना** – राजा

**पच्चक्खं** – प्रत्यक्ष

**हियय** – हृदय

**पडिबोह** – प्रतिबोध

1. खालील आकृती पूर्ण करा. (कोण ते लिहा)

- |    |                             |   |                                                 |
|----|-----------------------------|---|-------------------------------------------------|
| 1) | विद्वत्तेचा गर्व करणारा     | → | <input type="text"/>                            |
| 2) | पाण्यासाठी याचना करणारा     | → | <input type="text"/>                            |
| 3) | केवळ दोनच प्रवासी           | → | 1) <input type="text"/> 2) <input type="text"/> |
| 4) | भानुदासास प्रतिबोधित करणारी | → | <input type="text"/>                            |

2. जोड्या जुळवा.

‘अ’ गट

- 1) धरती आणि वृक्ष
- 2) चंद्र आणि सूर्य
- 3) नख आणि केस
- 4) धन आणि तारुण्य
- 5) राजा आणि पंडित

‘ब’ गट

- अ) अतिथी
- ब) मूर्ख
- क) प्रवासी
- ड) हट्टी
- इ) सहनशील

3. गटात न बसणारा शब्द ओळखा.

- |    |                                    |                                    |                                      |   |                      |
|----|------------------------------------|------------------------------------|--------------------------------------|---|----------------------|
| 1) | <input type="text" value="धणं"/>   | <input type="text" value="दव्वं"/> | <input type="text" value="कव्वं"/>   | → | <input type="text"/> |
| 2) | <input type="text" value="अकख"/>   | <input type="text" value="रूकख"/>  | <input type="text" value="दुम"/>     | → | <input type="text"/> |
| 3) | <input type="text" value="पुहवी"/> | <input type="text" value="धरणी"/>  | <input type="text" value="वसदी"/>    | → | <input type="text"/> |
| 4) | <input type="text" value="गव्व"/>  | <input type="text" value="सव्व"/>  | <input type="text" value="अहंकार"/>  | → | <input type="text"/> |
| 5) | <input type="text" value="सुरय"/>  | <input type="text" value="भारय"/>  | <input type="text" value="वासरमणी"/> | → | <input type="text"/> |

4. भानुदासाच्या गर्वहरणाचा प्रसंग सविस्तर लिहा.

